12–4–67 ओमशांति रात्रीक्लास

राजाई वा उंच पद पाने में डिफिकल्टी खास किसमे है?(शिवबाबा को याद करने में)और भी कोई बतावेंगे?(कोई डिफिकल्टी नहीं है) पुरुषार्थ की डिफिकल्टी लगती है?(नहीं) मुख्य याद की ही डिफिकल्टी है। और सबको ही है। इस डिफिकल्टी से कोई भी जरा भी छूटा हुआ नहीं है। सबसे जास्ती डिफिकल्टी यह है। देहीअभिमानी पूरा नहीं बन सकते हैं। देहअभिमान बहुत आता है। कोई को किस प्रकार की डिफिकल्टी है, कोई को किस प्रकार की। इसको भी माया कहा जाता है। कोई सर्विस भी नहीं करते हैं तो देह अभिमान ही कहेंगे। तो नजदीक बाप से मिल नहीं सकते अर्थात् विजयमाला में नजदीक आ नहीं सकते। विजयमाला में नजदीक वो ही आवेंगे जो कि बहुतों का कल्याण करेंगे। जो याद करेंगे और औरों को भी करावेंगे। सारी दुनियां चाहती है कि हम भगवान साथ जाकर मिले ;परंतु उनको पता नहीं कि बाप क्या चीज है। इसलिए ही ना समझते हैं ना ही जाकर मिल सकते हैं। जितना हो सके उंच विजयमाला मे पिरोये जाने लिए पुरुषार्थ करना चाहिए। बाकी विजयमाला में तो बहुत ही आ जाते हैं। सबसे जास्ती जीवन सफल उनका है जो औरों का जीवन सफल बनावे। दो/पांच की सर्विस करना कोई सर्विस नहीं है। यहां तो हजारों की ,लाखों की सर्विस करनी है। करोड़ों को रास्ता बताना है। सबको बताना चाहिए कि सतयुगी दैवी स्वराज्य आपका जन्मसिद्ध अधिकार है होवनहार विनाश से पहले। बापदादा। अच्छा, मीठे2 सिकीलधे सपूत ,आज्ञाकारी होवनहार देवताओं प्रति बापदादा का प्यार ओम।

13–4–67 रात्रीक्लास– कहां2 से वर (ठोकर) खाये आकर मिले हो। जबकि ईश्वर अथवा बाप और दादा उनके फिर तुम साथ रहते हो तो कहेंगे सबसे जास्ती तुम सौभाग्यशाली हो ;क्योंकि साथ रहते हो। दूसरे तो बाहर में दूर रहते हैं। सेंटर्स पर जाने वाले भी अपने2 घर में रहते हैं। सेंटर्स वाले भी बहुत समाचार बाहर के सुनते हैं। तुम तो यहां और कुछ भी नहीं सुनते हो। तो सभी कहेंगे कि सदा सौभाग्यशाली तो यह है। साथ रहते हैं ;परंतु बरसते नहीं हैं। वो कहेंगे हम बरसते हैं। अब सौभाग्यशाली कौन?जो जास्ती बरसते हैं वो बहुतों को प्रभुल्लित करते हैं। है भी बहुत सहज। बाहर वाले जो प्रदर्शनी में आते हैं उनको बुद्धि में बैठता ही नहीं है। भक्तिमार्ग का भूसा भरा हुआ है। वो निकले और ज्ञान में आवे सो तो कल्प पहले वाले ही होंगे। बहुत तो ऐसे भी होंगे जो यूं ही चक्र लगाकर भी चले जाते होंगे। सुना ;परंतु मगज में कुछ ना बैठा। ऐसे भी चक्र लगाते हैं। कोई सुनते भी हैं। आगे चलकर वो भी आवेंगे। जिसका जिस समय बाप से वर्सा लेने का मुहूर्त निकलता है वो उस समय ही आते हैं। आखरीन जो जरूर आवेंगे। जब बहुत हो जावेंगे तब समझेंगे कि यहां कुछ है। फिर कोशिश करें कर आवेंगे। ड्रामा बड़ा महीन है। जिस समय जिसके भाग्य में होगा उस समय ही तीर लगेगा। सुनते2 आखरीन में कुछ समझ आ जाती है। ऐसे बच्चों के पत्र व्यवहार आते हैं। कोई को कशिश होती है बाप के पास आने की ,कोई को नहीं होती है। कशिश हुई तो समझो सौभाग्यशाली बाप के पास आकर कुछ ना कुछ लेकर जावेंगे। रिफ्रेश होकर जावेंगे। भल गरीब हो ;परंतु सर्विसेबुल हो तो सेंटर की तरफ से भी मिल जाता है कि भल यह भी सम्मुख होकर आवे। मंदिरों में भी दूर2 कितने जाते हैं। यात्रा करने जाते हैं। मूर्ति तो घर में भी रख सकते हैं। फिर दूर क्यों जाते हैं?बद्रीनाथ भी जाते हैं। वहां पर भी तो शिव का चित्र ही है। एक ही शिव के कितने नाम रखकर मंदिर बनाये हैं। चीज एक ही है। इनको ही कहा जाता है भक्ति के धक्के। यह है बिल्कुल नई बात। आगे चलकर बहुत राजों का पता पड़ेगा। आखरीन में भी राजाई मिलती कैसे है?विनाश भी देखेंगे। बच्चों को खुशी भी होनी चाहिए। हम शांतिधाम से होकर फिर सुखधाम में जावेंगे। बार2 यही खयाल अंदर में आवे कि अब हमको घर जाना है। अब चक्र पूरा होता है। 84जन्म पूरे हुए हैं। फिर अब जाते हैं घर। फिर हम अपनी राजधानी में जावेंगे। आगे चलकर क्या फेर–गेर होता है वो भी सब सा. हो जावेगा। यह तो जरूर है जो होंगे सो ही देखेंगे। किसी का शरीर पर भरोसा नहीं है। कोई भी अनन्य हो, कोई भी समय में जा सकते हैं। कहेंगे ड्रामा। यह जाकर कुछ कल्याण करेंगे। कल्याणकारी

की मुहर तुम पर लगी हुई है। इसलिए ही गाया हुआ है ईश्वर कल्याणकारी है।मनुष्य समझते नहीं हैं। तुम बच्चे जानते हो। बाप क्या कल्याण आकर करते हैं। विनाश के लिए यह लड़ाई खड़ी है। जरूर बाप वर्सा देने आये हैं। विनाश होगा सभी शांतिधाम में चले जावेंगे। फिर वहां से आते जावेंगे। बहुत करके पूछते हैं कि एम ऑब्जेक्ट क्या है। बोलो यह है राजयोग की एम ऑब्जेक्ट। भगवान राजयोग सिखा रहे हैं। कहेंगे भगवान कौन है। क्या गीता के भगवान ने राजयोग नहीं सिखाया था। तुम समझते हो कृष्ण यहां को नहीं सकता है। उसी नाम–रूप में फिर यहां कैसे आ सकता है?उनको वो ही शरीर तब मिले जब सतयुग में आवे। इस समय कृष्ण का रूप हो नहीं सकता। भगवान और कोई साधारण रूप में आता है। अपना परिचय और सृष्टि की आदि,मध्य,अंत की नालेज और कोई परमात्मा के सिवाय दे नहीं सकते हैं। जब समझाते हो तो पहले2 ओपीनियन इस एक बात पर लिखनी है। कायदेसिर लिखवाते नहीं हैं। यह नहीं लिखवाते कि हमने ब्र.कु. से निश्चय किया है कि गीता का भगवान रचता पुनर्जन्मरहित परमपिता परमात्मा है ना कि रचना कृष्ण। कृष्ण से लेकर सब मनुष्य ही मनुष्य हैं। भगवान तो निराकार को कहा जाता है। उनका एडॉप्ट किया हुआ साधारण तन ब्रह्मा है। ब्र.कु.कु. बहुत है ना। शिवबाबा ने एडॉप्ट किया है इनको। इन द्वारा समझाते हैं। ऐसे2 बात समझानी चाहिए। बाबा जानते हैं समझाते समय भूल जाते हैं। मुख्य बात है भगवान की। इसलिए निकाला है गीता का भगवान कौन?भगवान सच्ची ही बताते हैं। भगवान है ही ट्रुथ। बाप ने बताया है तब तो हम समझाते हैं। भारत 5000वर्ष पहले स्वर्ग था। अभी तक मनुष्य याद करते जाते हैं। तुमको मालूम है हम जितना पढ़ेंगे उतना उंच पद पावेंगे। अपने आप ही अपने लिए शिवबाबा से प्राइज लेते हो। अपने पुरुषार्थ से सब कुछ पाते हो। हर एक अपनी कमाई करते हैं 21जन्मों के लिए। हमारा पार्ट अच्छा (है)। उंच पार्ट वाले खुश होते हैं ना। तुमको अपने ही ज्ञान और योग से सतयुगी राजधानी का हिस्सा लेना चाहिए। वो डाडे की प्रापर्टी के हकदार रहते हैं। सबको बराबर2 मिलता है। यहां हर एक को अपना ही पुरुषार्थ करना है। बाप को याद करना है और स्वदर्शन चक्र को फिराना है। अच्छा, मीठे2 बच्चों को गुडनाइट।

डायरैक्शन्स– कोई भी सेंटर से मधुबन आवे तो वो 15दिन पहले ही अपना पूरा समाचार अपने पूरे आक्युपेशन सहित देवे कि कौन2 कितने दिनों के लिए आ रहे हैं। कोई अपवित्र को मधुबन में ना आना है। 2– हर एक अपने2 सामान वज़न करवाकर पीछे गाड़ी पर चढ़ावे। रास्ते में दंड पड़ने पर ब्राह्मणों का नाम बदनाम होता है। ऐसा कोई प्रकार का अयोग्य कार्य करना ब्राह्मणों के लिए उचित नहीं है। 3–आजकल ट्रेन और बस में काफी भीड़ रहती है। इसलिए मधुबन में जो भी पार्टी आवे वो आबू रोड पर ही उतरने समय वापस जाने के दिन के लिए अपनी सीट्स रिजर्व करवा देवे और माउंट आबू पर भी बड़ी दीदी को भी वापस जाने की ता. बता देवें। तो बस की रिजर्वेशन पहले से ही करवा ली जावेगी। 4– जो भी पार्टी मधुबन आवे वो देहली और जयपुर को इतलाह करके आवे ताकि जो कोई चीज उनको देनी हो वो दे सकें। 5– मधुबन से जो बुक पोस्ट सेंटर्स पर जाते हैं तो कोई2 सेंटर्स वाले अपनी टिकट बचाने के लिए उसी मधुबन वाले लिफाफे में ही कोई मुरली डालकर फिर दूसरी तरफ.....करते हैं। बाबा कहें यह ऐसा करना रांग है। ऐसा कार्य कोई भी सेंटर वालों को ना करना है।